रिकॉर्ड :– आने वाले कल की तुम तकदीर हो... ॐ पिताश्री 20/5/64

ओमशांति। माताओं ने, सभी सजनियों ने गीत सुना। बच्चे जानते हैं, इस भारत की तकदीर में लकीर लगी हुई है। किस द्वारा लकीर लगी है? 5 विकारों रूपी रावण द्वारा। अब फिर तुम बच्चे भारत की तकदीर बनाय रहे हैं। तुम हो शिवशक्ति माताएँ। जब ज्ञान सागर आते हैं तो माताओं के ऊपर आए कलश रखते हैं। बाकी शास्त्रों में जो गपोड़े लगाए दिए हैं, ऐसी कोई बात नहीं है। तुम बच्चे जानते हो, हम भारत की तकदीर बनाने अर्थात् भारत को स्वर्ग बनाने वाले हैं बाप द्वारा। तुम बाप की सेना हो, बाप के घर की शोभा हो। माँ–बाप पास बच्चा न होता है तो घर जै(से) सूना लगता है। तो अब यह दुनिया भी सूनी हुई पड़ी है। अभी तुम बच्चे इनको स्वर्ग बनाने वाले हो। बाप कहते हैं, मैं तुम माताओं का गुलाम हूँ; क्योंकि आगे यह माताएँ पति के गुलाम थीं। इनको कहा जाता था– हिन्दू नारी का पति ही गुरु,ईश्वर,शिक्षक सब कुछ है। वास्तव में है इस समय की बात, वो फिर भक्तिमार्ग में ले गए हैं। परमपि०प० को ही इस समय कहा जाता है– त्वमेव माता च पिता। सब कुछ वो एक है। हिन्दू लोगों ने फिर पति के लिए कह दिया है। वास्तव में, शिवबाबा है पतियों का पति। तुम तो सदा सौभाग्यशाली बनते हो और यह पति तो अमर है। अमरनाथ है न! तुमको यह अमरनाथ, अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को बहुत याद करना है, जो तुमको पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को भूलने से रोना आ जाता है। बाप कहते हैं, क्या तुम्हारा साजन मर गया है जो तुम रोती हो! तुमको तो सदैव हर्षित रहना है। अभी हर्षितमुख रहना है। देवताओं का मुखड़ा सदैव हर्षितमुख रहता है। मनुष्य देखने से ही खुश होते हैं। देवताओं को वो खुशी कहाँ से लाई? संगम पर बाप ने ऐसा हर्षित मुख, खुश मिजाज़ बनाया था। अभी पुरुषार्थ करना है, तब ही वो अविनाशी बनेगा। बाप कहते हैं, रोने की तो बात ही नहीं। वाह! ऐसा सलोना साजन मिला है, जिससे स्वर्ग के महाराजा–महारानी बनते हो; फिर रोना क्यों? तुम तो इस सारी सृष्टि का श्रृंगार हो, मोस्ट वैल्युएबुल एक्टर्स हो। तुम श्रीमत पर कदम–2 चलते हो। तुम जो वर्शन सुनते हो, यह एक–2 लाख रुपये का है। वो विद्वान लोग गीता–वेदांत आदि सुनाते हैं तो कहते हैं, यह एक–2 वर्शन लाख रुपये का है; परन्तु ऐसे तो है नहीं। शास्त्र तो भारतवासी बहुत सुनते हैं, फिर धनवान, आयुष्मान, सम्पत्तिवान तो हुए नहीं हैं। शास्त्र हैं भक्तिमार्ग के, जो सुनते–2 सम्पत्तिवान के बदले इनसॉलवेंट बन पड़े हैं। तुम हर एक रूप–बसंत हो। आत्मा रूप है न! बाप भी है रूप। फिर इनको ज्ञान सागर कहा जाता है। ज्ञान की वर्षा करने वाला है। स्थूल पानी की बात नहीं, इसको तो ज्ञान रत्न कहा जाता है। हर एक को यह ज्ञान रत्नों का बीज बोना है मनुष्यों की बुद्धि में। समझाना चाहिए, तुम आत्मा हो, यह तुम्हारा शरीर है। तुम कहते भी हो– पाप आत्मा, पुण्य आत्मा। पाप परमात्मा, पुण्य परमात्मा नहीं कहते हैं। इससे सिद्ध है, परमात्मा सर्वव्यापी न है। माया पाप आत्मा बनाती है, बाप पुण्य आत्मा बनाते हैं। पुण्य आत्माओं की दुनिया को स्वर्ग, पाप आत्माओं की दुनिया को नर्क कहा जाता है। सबको पावन बनाने वाला, सद्गति दाता एक बाप है। तो तुम बच्चे इस बेहद घर के श्रृंगार हो। तुम्हें भारत का श्रृंगार करना है। वैकुण्ठ को वण्डर ऑफ वर्ल्ड कहा जाता है। मनुष्य तो वो जिस्मानी सात वण्डर्स दिखाते हैं। वो तो हैं मनुष्यों के बनाय हुए। वास्तव में वण्डर ऑफ वर्ल्ड है– वैकुण्ठ, जहाँ सब आत्माएँ सदा सुखी रहती हैं। गाती भी हैं, फलाना वैकुण्ठवासी हुआ; परन्तु जब तक बाप न आए तब तक वहाँ कोई जा नहीं सकता। अभी तुम बच्चे जानते हो, हम वैकुण्ठ में जाते हैं। वो जिस्मानी वण्डर्स आँखों से देखने के हैं। तुमको तो वैकुण्ठ में जाकर अथाह सुख भोगने हैं। वहाँ रोने की बात नहीं। बाप कहते हैं– तुम प०पि०प० की सजनी क्यों रोती हो? शायद साजन को भूल जाती हो। साजन को भूलना माने उनसे विदाई लेना। सदैव उनको याद करते रहो तो रोने की बात नहीं। बाकी किसी का संबंधी

आदि कोई मरता है तो रोते हैं। अब तुम तो सबसे जीते जी छुट्टी लेते हो। सबसे छुट्टी ले, रो–2 कर फिर सदा के लिए हँस पड़ती हो; क्योंकि वैकुण्ठ में जाती हो। कोई संबंधी मरता है तो ज़रूर रोना पड़े। न रोए तो सब कहते हैं, यह तो पत्थरदिल है। जोरी रोना भी पड़ता है। यहाँ तो रोने की दरकार नहीं। बाबा ने कहा है– अम्मा मरे तो भी हलुवा खाना। कौन–सा हलुवा? यह ज्ञान का। अब तो सब मरने हैं, किसका चिंतन कर किसका करेंगे! इतने सब मरेंगे, कोई क्रियाकर्म करने वाले भी न रहेंगे। जापान में बॉम्ब्स से इतने मरे फिर किसने क्रियाकर्म किया? क्रियाकर्म करने वाले भी मर जावेंगे। यह तो एक भक्तिमार्ग की रसम है। सतयुग में ऐसी बातें होतीं नहीं। वहाँ तो अथा(ह) सुख है। मोहजीत राजा की कथा भी वहाँ की है। तुमने जन्म–जन्मांतर यह कथाएँ सुनी हैं, अब बाप कहते हैं– मीठे बच्चे, जो कुछ पढ़ा–सुना है सब भूल जाओ, अब मुझ बाप से सुनो। शास्त्रों की कथाएँ सुनते–2 तुम नीचे गिरते आए हो। वो सब हैं गपोड़े। ईश्वर सर्वव्यापी, यह सबसे बड़ा गपोड़ा। हियर नो ईविल, सी नो ईविल। सबसे ईविल बात है ईश्वर सर्वव्यापी कहना। फिर कहते, श्री कृष्ण को 108 रानी थीं। कब भी कोई कहे, राम की सीता चुराई गई, बोलो– यह सब ईविल बातें मत सुनो। बन्दरों की शक्ल का एक बनाया हुआ है– टॉक नो ईविल, सी नो ईविल; क्योंकि इस समय मनुष्य बन्दर से बदतर हैं, जो सुनाओ वो सत्य–2 कहते रहते। पवन से हनुमान का जन्म हुआ, यह भी सत्य। हैं सब गपोड़े। अब बाप बैठ समझाते हैं, यह ग्लानि की बातें मत सुनो। मैं कल्प के संगम युगे–2 आता हूँ। बाप को तो ज़रूर आना ही है, तब तो नॉलेज दे। मनुष्य कहते, ऋषि–मुनि आदि त्रिकालदर्शी थे। बाबा कहते, बिल्कुल नहीं, ल०ना० भी त्रिकालदर्शी नहीं थे। त्रिकालदर्शी सिर्फ तुम ब्राह्मण बनते हो। तुम्हारा यह 84वाँ अन्तिम जन्म है। ऐसे नहीं, ये ज्ञान के संस्कार दूसरे जन्म में रहेंगे। नहीं, यह प्रायःलोप हो जाता। वहाँ तो राजाई स्थापन हो जाती है, फिर राजयोग की दरकार नहीं। तो देखो, बाप क्या कहते, मनुष्य क्या कहते हैं! रात और दिन का वास्ट डिफरेन्स है। मनुष्य कहें(गे), परमात्मा सर्वव्यापी है, बाप कहते– नहीं। मनुष्य कहते, अजुन कलियुग की आयु 40,000 बरस पड़ी है, बाप कहते– नहीं। कितने गपोड़े सुनाए घोर अंधियारे में डाला है। अब मीठा बाप कहते हैं, बहुत मीठा बनो। तुम ईश्वरीय दरबार में ईश्वर के बच्चे हो, तुम्हारा फर्ज है योग लगाना। गोवर्धन पर्वत पर जावेंगे तो वहाँ अंगुली दिखाते हैं। पर्वत की कितनी पूजा होती है! भारत जो गोल्डन एज्ड बन जाता तो पूजा होती नहीं। तो यह अंगुली है तुम्हारी निशानी। पवित्रता की प्रतिज्ञा करना, यह जैसे अंगुली देना है भारत को सैलवेज करने लिए। पवित्रता है तो पीस–प्रॉसपेरिटी भी है। पवित्रता न है तो भारत का हाल देखो क्या है! मेहनत है न! सन्यासी कहते, आग और कपूस इकट्ठे रह न सकते, शास्त्रों में ऐसा है; परन्तु वो तो है भक्ति की सामग्री। यह भी भावी है शास्त्र लिखने की। तुम सन्यासियों को कह सकते हो– तुम कहते हो, आग–कपूस इकट्ठे न रह सकते; परन्तु इनको श्रीमत थोड़े ही मिलती है। हम तो अब बाप की श्रीमत पर चलते हैं। उनको मिलती है शंकराचार्य की मत, यह है शिव आचार्य की मत। शिव आचार्य है, यह कोई नहीं जानते। कहते हैं, परमात्मा ज्ञान का सागर है, तो आचार्य हुआ न! शिवबाबा आचार्य है, ज्ञान सागर है, वो शंकराचार्य है। सन्यासी लोग बहुत शास्त्र पढ़कर टाइटिल लेते हैं। कृष्ण आचार्य कब नहीं कहा जाता। शिव का पता ही नहीं। वो ज्ञान को जानता नहीं। सिवाय बाप के और किसी को ज्ञान सागर नहीं कह सकते। कोई सन्यासी .....

तो बोलो– तुम हो निवृत्तिमार्ग वाले हठयोगी, हम हैं प्रवृत्तिमार्ग वाले राजयोगी। तुम राजयोग सिख(ला) नहीं सकते हो। तुम हो रजोगुणी; क्योंकि शंकराचार्य आते ही हैं द्वापर में। तुम्हारा है हठयोग कर्म सन्यास। वास्तव में कर्म सन्यास तो होता नहीं। अब तुम बच्चों को डायरैक्शन ही कुछ और मिलते हैं। मनुष्य चाहते हैं शांति में रहने। बोलो– अच्छा, अपन को ऑरगन्स से डिटैच कर दो; परन्तु सिर्फ डिटैच करने से फायदा न होगा। डिटैच हो फिर मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो। शांति का हार तो तेरे गले में पड़ा है, सिर्फ डिटैच कर दो। आत्मा का स्वधर्म है– शांति। हम आत्माएँ मूलवतन में साइलेंस रहती हैं। फिर सूक्ष्मवतन में है मूवी। अभी सूक्ष्मवतन की रचना हो रही है। यह है टॉकी, स्थूलवतन। तुम बच्चों ने साक्षात्कार भी किए हैं। बाबा से जास्ती तुमने देखा है। मम्मा ने फिर कुछ भी न देखा है, कभी भी ध्यान में न जाती है। ज्ञान में कितनी तीखी है! यह ध्यान की आश भी न रखनी चाहिए। मम्मा ने कब देखा न है, फिर बाबा से भी तीखी जा रही है– पहले श्री लक्ष्मी, फिर नारायण। इनके (बाबा) लिए लिखा हुआ है, अर्जुन को विनाश–स्थापना का साक्षात्कार कराया। इस रथ में रथी शिव बैठ नॉलेज देते हैं। इस रथ को भी नॉलेज उनसे मिलती है। यह खुद गीता पढ़ते थे, बहुत कथा करते थे। अब वण्डर लगता है, शास्त्रों में क्या–2 है! बाप कहते हैं, यह पढ़ा हुआ सब भूल जाओ, सुनो नहीं। देखते हुए न देखो। बस, हम तो जाते हैं बाबा के घर, स्वीट होम। जब तक गाइड ...., लिबरेटर न आए तब तक कोई जा नहीं सकता। पण्डा और मुक्तिदाता तो एक ही बाप है। मुक्ति करते हैं दुःख से; इसलिए उनको गति–सद्गति दाता कहा जाता है। वो है मनुष्य सृष्टि (का) बीजरूप, सुप्रीम सोल। निराकारी दुनिया है आत्माओं के रहने का धाम। ऐसे नहीं कि ब्रह्म (परमात्मा) है, उसमें आत्माएँ लीन हो जाएँगी। कितनी वण्डरफुल बातें हैं! बाप और तुम्हारा 84 जन्मों (का) पार्ट इम्पेरिसीबुल है। यह कब मिट नहीं सकता। सृष्टि अनादि रची हुई है। सतयुग को नई (सृष्टि) कहा जाता। अब है पुरानी सृष्टि। बाकी सृष्टि कोई विनाश नहीं होती। बाप आते ही हैं पतित सृष्टि को पावन बनाने। सृष्टि है ही है। 84 जन्म ज़रूर देवताओं के ही होंगे, फिर कम होते जाते हैं। फिर क्रिश्चियन आदि का भी हिसाब निकाल सकते हैं। वास्तव में, भारतवासियों की सेन्सस बहुत होनी चाहिए; परन्तु और धर्मों में कनवर्ट होने कारण कम हो गए हैं। नाम ही हिन्दू रख दिया है। बाप कहते हैं, मैं आता हूँ जब मुझे देवी–देवता धर्म की स्थापना करनी है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराता हूँ। फिर जो स्थापना करते हैं वो ही पालना करेंगे। गाँधी को भी जिन्होंने मदद की, मेहनत की, आज बहुत सुखी हैं। वहाँ सुखी तो सब बनेंगे, बाकी पद में फर्क पड़ जाता है। जो बाप से योग रखेंगे और वर्से को याद करेंगे वे सूर्यवंशी बनेंगे। कम याद करेंगे तो चंद्रवंशी, नहीं तो फिर प्रजा। दास–दासियाँ आदि तो बहुत चाहिए न! राम को भी पहले लक्ष्मी–नारायण का दास–दासी बनना पड़े; क्योंकि ल०ना० फुल पास हुए। वो फेल हुआ; इसलिए उनको क्षत्रिय कहते हैं। शास्त्रवादियों ने फिर हिंसा की निशानी दे दी है। हिंसा वहाँ होती नहीं, है माया पर जीत पाने की बात। तुम भी युद्ध के मैदान में हो; परन्तु तुम हो योगबल की अहिंस(क)। बाप ने समझाया है, योगबल से ही कोई भी विश्व का मालिक बन सकता है। क्रिश्चियन घराने में नहीं तो ..... बल है, मिल जाएँ तो सारी दुनिया के मालिक बन जाए; परन्तु लॉ नहीं कहता। वो बंदर की कहानी है न। कृष्ण के मुख में मक्खन आ जाता है विश्व की राजाई का। तो विश्व का राज्य योगबल से ही मिल सकता है। तुम हो (श्रृं)गार। बाप कहते हैं, मैं स्वर्ग रचता हूँ। तुम बच्चों का भी यह धंधा है। बच्चे फिर .... फिर बच्चे बन स्थापना में मदद करते हैं। अच्छा, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ..... स्वर्ग आश्रम के सर्व सेन्टर के गोप–गोपियों को यादप्यार।